रियल–रिलेटिव

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

रियल का अर्थ है वास्तविक और रिलेटिव की अर्थ है सापेक्षता। वास्तविकता और सापेक्षता जीवन के दो पक्ष हैं। यह संपूर्ण सृष्टि एक दूसरे से जुड़ी हुई है। चेतन और जड़ के संयोग से यह सृष्टि चल रही है। एक के बिना दूसरा नहीं चल सकता। इसलिए दोनों की आवश्यकता है। विश्व में हर जगह इन दोनों की सत्ता है। संसार जड़ और चेतन दो तत्त्वों से मिलकर बना है। आत्मा चेतन तत्त्व है और जड़ पदार्थ गलन, मिलन धर्मा है। जड़ पदार्थ में सुख–दुःख की अनुभूति नहीं होती इसे पुद्गल कहते हैं। जड़ पदार्थ रूप, रस, गन्ध, स्पर्श से युक्त है। जड़ एवं चेतन के मिश्रण से संसार संचालित होता है। शरीर जड़ होने पर भी चेतन के कारण चलता है। मनुष्य एक सापेक्ष प्राणी है। चौरासी लाख जीवन यौनियों में सभी सापेक्ष हैं।

परस्परोपग्रहोजीवानाम् अर्थात् परस्पर सहयोग से जीवन आगे बढ़ता है। एक के बिना दूसरा नहीं रह सकता। जड़, पदार्थ, प्रकृति और पंचभूतों के सहयोग से हम जीवित रहते हैं। इसको एक उदाहरण से समझा जा सकता है। किसान खेती करता है, खेत में अनेक पदार्थों को उगाता है। यदि वह कपास का बीज वपन करता है तो कपास की प्राप्ति होती है। कपास से कपड़ा बनता है। कपड़े के लिए धागों की आवश्यकता होती है। धागों को परिमार्जित करके रंग चढ़ाकर के रंग बिरंगे सूतों का निर्माण होता है। जब यह धागा फैक्ट्री में जाता है तो वहां वस्त्र तैयार होता है। वस्त्र तैयार होने में सबका किसी न किसी रूप में सहयोग रहा है। न तो केवल फेक्ट्री हर कार्य कर सकती है और न किसान ही सब कार्य कर सकता है। कार्य को करने के लिए सब एक दूसरे पर आश्रित है। अंत में जाकर कार्य पूरा होता है। यही दृष्टान्त मानव जीवन पर चरितार्थ होता है।

सृष्टि चेतन और जड़ दो तत्वों से बनी है। भोजन साधन है। शरीर इसका उपयोग करता है। बिना भोजन के शरीर यात्रा संभव नहीं है। भोजन से प्राण शक्ति आती है और प्राण चेतना से शरीर संचालित होता है। वर्तमान समय में हमें यह शरीर प्राप्त हुआ है वह पूर्व जन्मों के कर्मों का परिणाम है। जिसने जैसा कर्म किया है उसी का भुगतान करने के लिए वैसा शरीर उसे प्राप्त हुआ है। शरीर और आत्मा रिलेटिव है। हमारे अंदर विद्यमान आत्मा रियल या वास्तविक है और यह शरीर रिलेटिव या सापेक्ष है। जब तक आत्मा शरीर में रहता है, शरीर अपना कार्य करता रहता है। जैसे ही आत्मा शरीर से निकला शरीर वही है, किन्तु उसकी सम्पूर्ण गतिविधि पर विराम लग जाता है। इसीलिए आत्मा को वास्तविक कहा गया है। आत्मा के न रहने पर शरीर का कोई मूल्य नहीं है। शरीर केवल अभिव्यक्ति है। सुख–दुःख की अनुभूति आत्मा को नहीं बल्कि शरीर को होती है। कर्मों से मुक्त होने के बाद आत्मा निरपेक्ष हो जाती है। निरपेक्षता ही उसका वास्तविक अस्तित्व है।

यह संसार पंचभूतात्मक है। पाँचों भूत आत्म सापेक्ष हैं। शरीर नष्ट होने पर पाँचों तत्त्व अपने मूल रूप में समाहित हो जाते हैं। प्रकृति और मानव सापेक्ष हैं। प्रकृति से हमें शुद्ध वायु मिलती है यदि शुद्ध वायु न मिले तो मानव जीवन चल नहीं सकता। हर जगह सापेक्षता दिखाई देती है। सम्पूर्ण सृष्टि वाइब्रेशन से संचालित हो रही है। द्रव गैस में बदलता है, गैस अन्य तत्त्वों में बदल जाती है। हर जगह सापेक्षता है। केवल आत्मा निरपेक्ष और वास्तविक तत्त्व है। वह अजर अमर अविनाशी है। आत्मा सनातन सत्य है। मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? कहाँ जाउंगा? इन प्रश्नों के उत्तर के लिए आत्मचिन्तन करना पड़ता है। इन प्रश्नों का समाधान बाह्य जगत में नहीं बल्कि आन्तरिक जगत में खोजना पड़ता है। मैं कौन हूँ? जब यह प्रश्न उपस्थित होता है तो आत्मा की सत्ता सामने आ जाती है। शरीर आत्मा नहीं है। शरीर जड़ पदार्थ है। मैं शब्द के द्वारा जिसका बोध होता है वही आत्मा है। आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। गीता में कहा गया है कि जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नया वस्त्र धारण करता है, वैसे ही आत्मा पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को धारण करता है। इससे यह ज्ञात होता है कि शरीर विनासशील है और आत्मा अविनाशी। शरीर को चलाने वाला आत्मा ही है। आत्मा निरपेक्ष और शरीर सापेक्ष है।

मानव जीवन में सुख–दुःख, हर्ष–विषाद, लाभ–हानि आते जाते रहते हैं। यह सब सापेक्ष हैं। सुख के बाद दुःख, हर्ष के बाद विषाद और लाभ के बाद हानि का आना–जाना लगा रहता है। संसार परिवर्तनशील है। चक्र के पहिए की तरह ऊपर–नीचे होना इसकी गति है। प्रकृति में भी सापेक्षता देखी जाती है। ऋतुओं का बदलना, मौसम में परिवर्तन आदि क्रियाएं सापेक्षता के कारण ही होती हैं। हमारे जीवन में भी जो सुख–दुःख आता है वह भी कर्म सापेक्ष है। हमने पूर्वजन्म में जैसा कर्म किया है, वर्तमान जन्म में वैसा फल प्राप्त हो रहा है। अतः सापेक्षता का सिद्धान्त सर्वत्र लागू होता है। मन, वचन और काया के द्वारा जो कुछ किया जाता है वह सापेक्ष है। हमने जो बोया है उसीका फल प्राप्त हो रहा है। बुद्धि कर्मानुसारिणी होती है। कुदरत संयोग जुटाता है। उपादान हमाने भीतर के कार्य हैं। उसका भुगतान करने के लिए हमें जीवन प्राप्त हुआ है। पूर्वजन्म में मैंने जैसा व्यवहार जिसके साथ किया था वैसा व्यवहार अगले जन्म में वह प्राणी हमारे साथ करता है। कुदरत के कानून के अनुसार सुख–दुःख प्राप्त होते हैं।